

### III. बाह्य क्षेत्र

प्रारंभिक संकेत दर्शाते हैं कि 2011-12 की तीसरी तिमाही के दौरान चालू खाते का घाटा तथा इसका वित्तपोषण दबाव में रहा क्योंकि पूंजीगत प्रवाह कमजोर पड़ गया था। पहली छमाही के दौरान आयातों की तुलना में निर्यातों में वृद्धि की दर अधिक रहने के बावजूद वर्ष के दौरान चालू खाते का घाटा अधिक होने की संभावना है। रुपये के मूल्य में गिरावट के बावजूद आयात की मांग सुदृढ़ रही जो तेल की बेलोच मांग तथा स्वर्ण की बढ़ती मांग को दर्शाता है। अल्पावधि प्रवाह के अनुपात में बढ़ोतरी के साथ पूंजी अंतर्वाहों की संरचना ऋण के पक्ष में हो गई। निवल अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति में सुधार के बावजूद चालू खाते के घाटे के बढ़ने, पूंजीगत प्रवाह के घटने तथा संवेदनशीलता संकेतकों के मामूली बिगड़ने के चलते घरेलू सुधार प्रक्रिया को तेज करने की जरूरत है। इससे पूंजी प्रवाह को पुनः प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी।

#### बाह्य क्षेत्र के समग्र परिदृश्य में गिरावट आई

III.1 यूरो क्षेत्र के सरकारी ऋण संकट से जुड़ी बढ़ती अनिश्चितताओं, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आई गिरावट तथा घरेलू अर्थव्यवस्था की कमजोरी ने चालू खाते के शेष, पूंजी प्रवाह तथा संवेदनशीलता संकेतकों की दृष्टि से भारतीय बाह्य क्षेत्र के परिदृश्य पर प्रतिकूल असर डालने में भूमिका निभाई। रुपये के मूल्य में गिरावट के बावजूद यदि 2011-12 की तीसरी तिमाही में निर्यात में देखी गई

गिरावट जारी रहती है तथा अल्पावधि में अपर्याप्त लोच के लक्षणों के साथ आयात का स्तर वर्तमान की प्रवृत्ति के अनुरूप रहता है तो व्यापार घाटे के ऊंचे स्तर पर बने रहने की संभावना है। रुपये के मूल्यहास के कारण प्रेषणों के प्रवाह में सुधार आने के बावजूद मौसमी प्रवृत्ति को दर्शाते हुए 2011-12 की तीसरी तिमाही में चालू खाते के घाटे में और वृद्धि होने तथा चौथी तिमाही में इसके कम होने की संभावना है जिससे पूरे वर्ष के चालू खाते के घाटे का स्तर अधिक होगा। इसके अलावा, दिसंबर के उत्तरार्ध से रुपये में स्थिरता आने से इक्विटी निवेश अंतर्वाहों का आगमन फिर से होने लगा है।

#### वैश्विक वृद्धि तथा व्यापार में फिर से धीमापन आने से निर्यात के निष्पादन में गिरावट की संभावना है

III.2 भारत के पण्यों का निर्यात वैश्विक वित्तीय बाजारों की अनिश्चितताओं के चलते वैश्विक व्यापार में फिर से कमी आने तथा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मांग में गिरावट की वजह से 2011-12 के लिए निर्धारित 300 बिलियन अमरीकी डॉलर के लक्ष्य से कम हो सकता है। 2011-12 की पहली छमाही में बेहतर निष्पादन के बाद 2011 की तीसरी तिमाही में वस्तुओं के निर्यात में गिरावट आई (सारणी III.1 तथा चार्ट III.1अ)<sup>1</sup>। यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपनाए गए मितव्ययिता के उपाय तथा उपभोग व्यय में आई गिरावट आने वाले दिनों में भारत के निर्यात को प्रभावित कर सकते हैं।

#### सारणी III.1: भारत का पण्य व्यापार

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

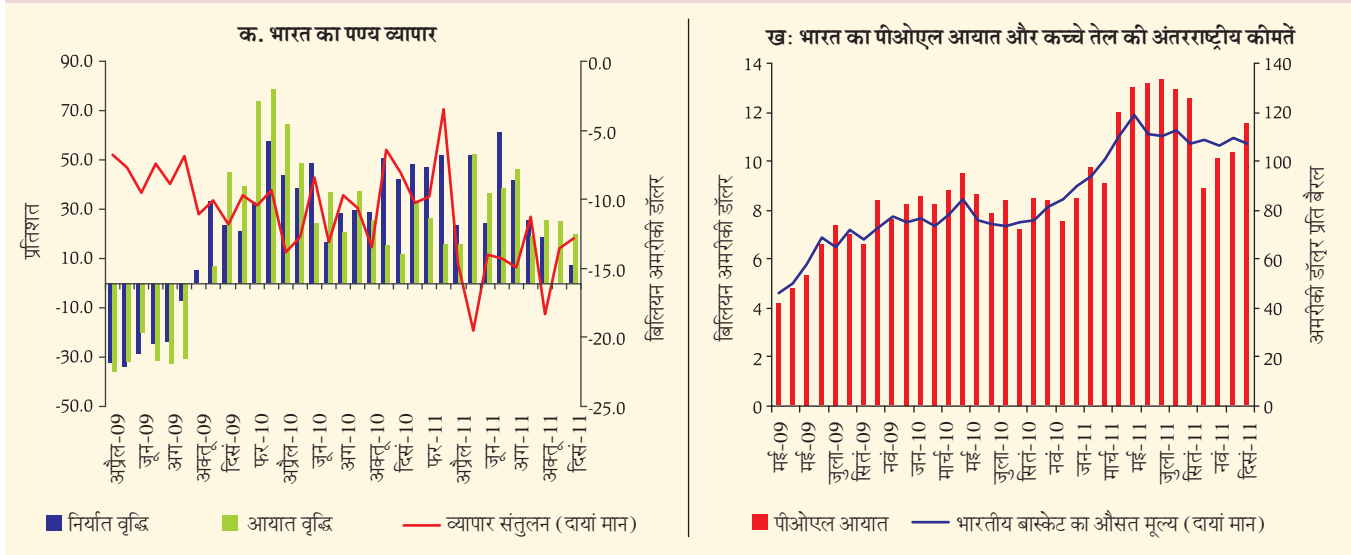
मद	2009-10 (सं)		2010-11 (अ)		अप्रैल-दिसंबर			
					2010-11		2011-12	
	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)	राशि	वृद्धि (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
निर्यात	178.8	-3.5	250.1	39.9	173.0	36.0	217.6	25.8
जिसमें से: तेल	28.2	2.3	41.4	46.8	28.3	45.3	43.9	55.0
तेल से इतर	150.6	-4.6	208.7	38.6	144.7	32.8	173.7	20.1
आयात	288.4	-5.0	369.8	28.2	269.1	29.8	350.9	30.4
जिसमें से: तेल	87.1	-7.0	104.0	19.4	75.2	22.0	105.6	40.4
तेल से इतर	201.3	-4.2	265.8	32.0	193.9	33.1	245.3	26.5
व्यापार घाटा	-109.6		-119.7		-96.1		-133.3	
तेल से इतर वस्तुओं का व्यापार घाटा	-50.7		-57.1		-49.2		-71.6	

सं: संशोधित। अ: अनंतिम।

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय।

<sup>1</sup> डीजीसीआईएस द्वारा पण्य निर्यात में ₹9 बिलियन अमरीकी डॉलर की गिरावट को समाविष्ट करते हुए अद्यतन आंकड़ों पर आधारित।

चार्ट III.1: भारत का पण्य व्यापार



उल्लेखनीय रूप से, 2010-11 में सरकार द्वारा बाजार तथा उत्पादों के विविधीकरण हेतु किये गये उपायों ने वैश्विक जीडीपी में भारत के निर्यात को बढ़ाने में मदद की। तथापि, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आया धीमापन उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार की मात्रा को कम करने वाला कारक साबित हो रहा है। इस वैश्विक पृष्ठभूमि में, भारत के निर्यात बाजारों में विविधीकरण को बढ़ाने के लिए किये गए उपायों का असर सीमित हो सकता है।

### तेल तथा स्वर्ण के आयात की गैर-लचीली मांग से व्यापार घाटे में बढ़ोतरी हुई

III.3 दिसंबर 2011 तक व्यापार घाटे में जो विस्तार हुआ वह मुख्यतः 'तेल' तथा 'स्वर्ण और चांदी' के आयातों की वजह से था। तेल के आयात की लोच अंतरराष्ट्रीय कीमतों तथा विनिमय दरों में होने वाले परिवर्तन के प्रति प्रायः कम संवेदनशील रहती है। दूसरी ओर, पारंपरिक उपयोग के अलावा ऐसा लगता है कि हाल के समय में निवेश के रूप में स्वर्ण की मांग में बढ़ोतरी हुई है। पेट्रोलियम, तेल तथा लुब्रिकेंट्स (पीओएल) के आयातों में हुई वृद्धि मुख्यतः तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में हुई बढ़ोतरी को दर्शाती है (चार्ट III.1ख)। अप्रैल-दिसंबर 2011 के दौरान जहां भारतीय तेल बास्केट के औसत अंतरराष्ट्रीय मूल्य में अप्रैल-दिसंबर 2010 की तुलना में 38.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं इसी अवधि में पीओएल के आयात में 40.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार, अप्रैल-दिसंबर 2011 के दौरान स्वर्ण तथा चांदी के आयात में 53.8 प्रतिशत की तेज वृद्धि हुई। सितंबर 2011 तक के विस्तृत आंकड़ों के आधार पर किए गए

अनुमान के अनुसार स्वर्ण के आयात में वृद्धि मूल्य तथा मात्रा दोनों ही दृष्टियों से हुई। अनुमान है कि अप्रैल-सितंबर 2011 के दौरान स्वर्ण के आयात की मात्रा 25.1 प्रतिशत बढ़कर 554 मिलियन टन हो गई तथा इसी अवधि में स्वर्ण की औसत अंतरराष्ट्रीय कीमत 31.1 प्रतिशत बढ़कर 1607 अमरीकी डॉलर प्रति ट्राय औंस हो गई।

### सॉफ्टवेयर, जोकि सेवाओं की मद में प्रमुख है, से होने वाली आय में संभावित गिरावट से चालू खाते के घाटे के बढ़ने का जोखिम और बढ़ गया है

III.4 वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं में बढ़ोतरी होने से चालू खाते के घाटे का जोखिम काफी बढ़ गया है (सारणी III.4)। जहां तेल और स्वर्ण के बेलोच वाली आयात के साथ-साथ वस्तुओं के निर्यात की मांग के कमजोर पड़ने से व्यापार घाटे में और बढ़ोतरी हो सकती है वहीं सॉफ्टवेयर निर्यातों की प्राप्तियों, कारोबारी सेवाओं तथा निवेश आय में गिरावट से उत्पन्न जोखिम से चालू खाते का घाटा भी प्रभावित हो सकता है। यदि यूरो क्षेत्र के ऋण के संकट का समाधान नहीं होता है तथा संक्रमण अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में फैल जाता है तो अमरीका तथा यूरोपीय यूनियन अपने आईटी के बजटों में कमी कर सकते हैं जिसका भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात की संभावना पर असर पड़ सकता है। इसी प्रकार उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक गतिविधियों के कमजोर पड़ने से कारोबारी सेवाओं में गिरावट आ सकती है जैसा कि 2008-09 तथा 2009-10 की चौथी तिमाहियों में देखी गई थी। इसके परिणामस्वरूप, चालू खाते के घाटे के 2011-12 की पहली तिमाही के 3.4 प्रतिशत से लगातार बढ़कर

### सारणी III.2: भारत के भुगतान संतुलन की प्रमुख मदे

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

	2010-11 (आंस)	2010-11 (आंस)				2011-12	
		ति1	ति2	ति3	ति4	ति1 (आंस)	ति2 (आ)
1. वस्तुओं का निर्यात	250.6	55.2	52.0	66.0	77.4	74.4	76.6
2. वस्तुओं का आयात	381.1	87.2	89.0	97.4	107.4	116.1	120.5
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-130.4	-32.0	-37.0	-31.4	-30.0	-41.7	-43.9
4. सेवाओं का निर्यात	131.7	26.5	31.1	38.8	35.3	33.3	34.0
5. सेवाओं का आयात	83.0	16.7	19.2	26.3	20.7	17.9	18.5
6. निवल सेवाएं (4-5)	48.7	9.7	11.9	12.5	14.6	15.4	15.5
7. वस्तुओं और सेवाओं का संतुलन (3+6)	-81.8	-22.3	-25.1	-19.0	-15.5	-26.3	-28.4
8. प्राथमिक आय, निवल (कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति और निवेश आय)	-17.3	-3.5	-4.8	-4.6	-4.5	-4.4	-4.7
9. द्वितीयक आय, निवल (निजी अंतरण)	53.1	13.1	13.0	13.4	13.6	14.8	16.2
10. निवल आय (8+9)	35.8	9.6	8.2	8.8	9.1	10.4	11.5
11. चालू खाता शेष (7+10)	-46.0	-12.6	-16.9	-10.1	-6.3	-15.8	-16.9
12. पूंजी और वित्त लेखा, निवल (रिजर्व में परिवर्तनों को छोड़कर)	62.0	17.2	21.6	14.0	9.1	22.5	18.4
13. रिजर्व में परिवर्तन (-) वृद्धि / (+) कमी	-13.1	-3.7	-3.3	-4.0	-2.0	-5.4	-0.3
14. भूल-चूक -(11+12+13)	-3.0	-0.9	-1.4	0.1	-0.8	-1.3	-1.2
<b>जापान मदे (जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)</b>							
15. व्यापार शेष	-7.5	-8.3	-9.5	-6.8	-6.1	-9.0	-9.6
16. निवल सेवाएं	2.8	2.5	3.1	2.7	3.0	3.3	3.4
17. निवल आय	2.1	2.5	2.1	1.9	1.9	2.3	2.5
18. चालू खाता शेष	-2.7	-3.3	-4.4	-2.2	-1.3	-3.4	-3.7
19. पूंजी और वित्त लेखा, निवल	3.6	4.5	5.6	3.0	1.9	4.9	4.0

**टिप्पणी:** पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि उप घटकों का जोड़ समग्र से मेल न खाता हो।  
अ.: अर्न्तम। आंस: आंशिक रूप से संशोधित।

जीडीपी का 3.7 प्रतिशत हो जाने से घाटे की स्थिति के दबाव में रहने की संभावना है (सारणी III.2)।

### इक्विटी प्रवाहों के कमजोर पड़ने पर चालू खाते के घाटे के वित्तपोषण की प्रवृत्ति में बदलाव की संभावना है

III.5 वैश्विक वित्तीय बाजारों में जोखिम से बचने की प्रवृत्ति के चलते भारत में पूंजी प्रवाह की गति धीमी हुई (सारणी III.3)। अप्रैल-अगस्त 2011 के दौरान एफडीआई अंतर्वाह सुदृढ़ अर्थात् औसतन प्रतिमाह 4.9 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा परंतु सितंबर-नवंबर 2011 के दौरान यह गिरकर औसतन प्रतिमाह 3.2 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गया (सारणी III.4)। यदि एफडीआई अंतर्वाह की गति में फिर से तेजी नहीं आती है तथा एफआईआई इक्विटी अंतर्वाह की वृद्धि दर में गिरावट आती है तो आगामी तिमाहियों में चालू खाते के घाटे का वित्तपोषण मुख्य रूप से ऋण सृजन करने वाले

प्रवाहों से करना होगा। एफआईआई प्रवाहों में हाल में जो वृद्धि हुई है उसका मुख्य कारण ऋण लिखतों में निवेश किया जाना है।

### ऋण का सृजन करने वाले पूंजी प्रवाह भी जोखिम विमुखता का शिकार हो सकते हैं

III.6 बाह्य वाणिज्यिक उधार एवं एनआरआई जमाराशियों के प्रवाह को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए गए हैं। जहां एनआर(ई) आरए तथा एनआरओ खातों पर अंतर्वाह में अप्रैल-दिसंबर 2011 के दौरान वृद्धि हुई वहीं एफसीएनआर(बी) खातों पर अंतर्वाह ऋणात्मक रहा। 2011-12 की चौथी तिमाही में भारतीय कंपनियों द्वारा चुकाई जाने वाली ईसीबी तथा एफसीसीबी की राशि 4 बिलियन अमरीकी डॉलर से कम रहने का अनुमान किया गया है। वैश्विक समष्टि आर्थिक तथा वित्तीय बाजार की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए रिजर्व बैंक ने ईसीबी की सभी लागत समाविष्ट सीमा में वृद्धि की। सभी लागत समाविष्ट सीमा में की गई बढ़ोतरी तथा भारत में रुपये में किये जाने वाले व्यय से जुड़ी ईसीबी की प्राप्तियों को तत्काल लाने

### सारणी III.3: निवल वित्तीय लेखा

(बिलियन अमरीकी डॉलर)				
	अप्रैल-जून (आंस)	अप्रैल-जून (आंस)	जुलाई-सितंबर 2011 (प्रा.)	जुलाई-सितंबर 2010 (आंस)
1	2	3	4	5
<b>1. प्रत्यक्ष निवेश (निवल)</b>	<b>7.9</b>	<b>3.5</b>	<b>4.4</b>	<b>3.6</b>
1.क भारत को प्रत्यक्ष निवेश	13.3	6.7	7.3	7.5
1.ख भारत द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	-5.4	-3.3	-2.9	-3.9
<b>2. संविभाग निवेश (निवल)</b>	<b>2.3</b>	<b>3.5</b>	<b>-1.4</b>	<b>18.7</b>
2.क भारत को संविभाग निवेश	2.5	3.5	-1.6	18.8
2.ख भारत द्वारा संविभाग निवेश	-0.2	0	0.2	-0.1
<b>3. अन्य निवेश (3.क +3.ख +अ.ग +3.घ +3.ङ)</b>	<b>12.6</b>	<b>10.4</b>	<b>15.2</b>	<b>-0.7</b>
3.क अन्य इक्विटी (एडीआर/जीडीआर)	0.3	1.1	0.2	0.5
3.ख मुद्रा और जमाराशियां	1.2	1.1	2.8	0.4
जमाराशियां लेने वाले निगम (एनआरआई जमाराशियां)	1.2	1.1	2.8	1.0
3.ग ऋण (निवल)*	15.5	7.6	11.3	0.4
3.ग.i भारत को ऋण	15.5	7.7	10.6	0.7
जमाराशियां लेने वाले निगम	11.5	2.9	3.9	-3.6
सामान्य सरकारी (बाह्य सहायता)	0.4	2.5	0.3	0.6
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	3.6	2.3	6.4	3.7
3.ग.ii भारत द्वारा ऋण	-	-0.1	0.6	-0.3
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	-	-0.1	0.6	-0.3
3.घ व्यापार ऋण और अग्रिम	3.1	4.3	2.9	2.6
3.ङ अन्य खाते, प्राप्य/ देय	-7.4	-3.7	-1.9	-4.6
<b>4. रिज़र्व आस्तियां</b>	<b>-5.4</b>	<b>-3.7</b>	<b>-0.3</b>	<b>-3.3</b>
<b>वित्तीय लेखा (1+2+3+4)</b>	<b>17.4</b>	<b>13.6</b>	<b>17.9</b>	<b>18.3</b>

**टिप्पणी:** पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि उप घटकों का जोड़ समग्र से मेल न खाता हो।  
प्रा.: प्राथमिक आंस; आंशिक रूप से संशोधित (-): शून्य / नगण्य  
\* इसमें बाह्य सहायता, बाह्य वाणिज्यिक उधार और गैर-अनिवासी भारतीयों की बैंकिंग पूंजी शामिल है।

पर जोर दिए जाने से विदेशी उधार जुटाने तथा चालू खाते के घाटे के वित्तपोषण में सुविधा होगी। साथ ही एनआरआई तथा एनआरओ लेखाओं की ब्याज दरों पर और अधिक विनियंत्रण करके बैंकों को अनिवासी जमाराशियां संग्रह करने में अधिक सुविधा दी गई है।

III.7 यूरोपीय केंद्रीय बैंक तथा अन्य केंद्रीय बैंकों द्वारा हाल में किए गए उपायों से यूरो क्षेत्र में बैंकों के लिए वित्तपोषण की स्थितियों में बेहतर आई है, कुछ यूरोपीय बैंकों द्वारा डीलिवरेजिंग का सहारा लिए

जाने से उभरती बाजारों में सीमापार उधार की स्थिति प्रभावित होने लगी है। अतः अगली तिमाहियों में ईसीबी से प्राप्त होने वाले प्रवाह मुख्यतः यूरोपीय बैंकों की जोखिम की धारणा पर निर्भर करेगा। यदि वैश्विक वित्तीय बाजारों में जोखिम विमुखता की स्थिति बनी रहती है तो इससे बाह्य वित्त प्राप्त करने की लागत प्रभावित हो सकती है।

**डॉलर प्राप्त करने की प्रवृत्ति से कई उभरती बाजारों में मुद्रा पर दबाव पड़ सकता है**

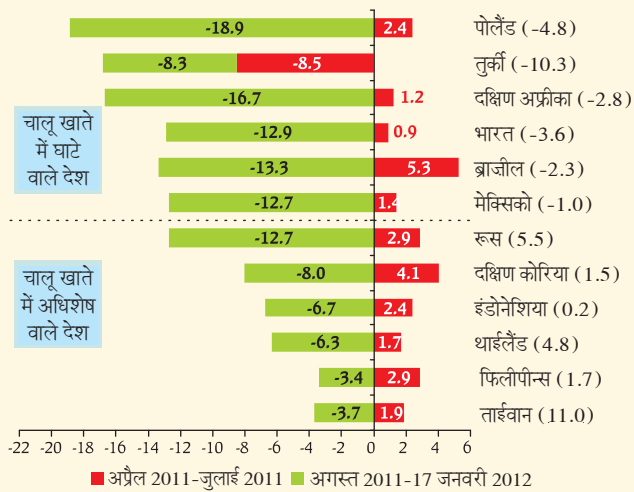
III.8 निवेशकों की जोखिम उठाने की घटती प्रवृत्ति ने वैश्विक सुरक्षित मुद्रा के रूप में अमरीकी डॉलर को अपनाते प्रवृत्ति को बढ़ाया है। डॉलर, विशेष रूप से उभरती तथा विकासशील देशों की मुद्राओं की तुलना में सामान्यतः मजबूत हुआ है। चालू खाते के घाटे की स्थिति में रहने वाली उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्था की मुद्राएं चालू खाते में अधिशेष की स्थिति वाली उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्था की तुलना में काफी दबाव में आ गई (चार्ट III.2)। ब्राजील, रूस तथा दक्षिण कोरिया सहित कुछ देशों के केंद्रीय बैंकों ने विनिमय दर के उतार-चढ़ावों को व्यवस्थित करने के लिए मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप किया। जोखिम विमुखता की स्थिति में सुधार न होने पर उभरती तथा विकासशील देशों की मुद्राएं दबाव में

### सारणी III.4: 2011-12 में पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)		
घटक	2011-12 (अप्रै-अग)	2011-12 (सितं-दिसं)
	(मासिक औसत)	
1	2	3
भारत को प्राप्त एफडीआई*	4.9	3.2
भारत द्वारा एफडीआई	1.0	0.8
एफआईआई (निवल)	0.4	0.1
एडीआर/जीडीआर	0.1	0.1
ईसीबी अंतर्वाह (निवल)	1.3	0.6
एनआरआई जमाराशियां (निवल)	0.5	1.2

\* : अप्रैल-नवंबर

**चार्ट III.2 : अमरीकी डॉलर की तुलना में उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राओं में उतार-चढ़ाव**



**टिप्पणी:** कोष्ठकों के आंकड़े भारत को छोड़कर डब्ल्यूईओ के वर्ष 2011 के अनुमानित/ प्रक्षेपित चालू खाते का घाटा दर्शाते हैं। भारत के संबंध में अप्रैल-सितंबर 2011 के वास्तविक आंकड़े दिये गये हैं।

**स्रोत:** विनिमय दर के आंकड़े ब्लूमबर्ग से लिए गए हैं।

बनी रहेंगी। 2011-12 में अब तक चालू खाते के घाटे के उच्चतर स्तर पर बने रहने तथा पूंजी प्रवाह में गिरावट आने के चलते भारतीय रुपये में आई गिरावट में व्यापार, पूंजी तथा व्यापार चैनलों के माध्यम से कार्य करने वाली शक्तियों के अंतर-संबंध परिलक्षित होते हैं।

### सांकेतिक आधार पर रुपये के कमजोर पड़ने पर रीर में गिरावट आई

III.9 तीसरी तिमाही में वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (अर्थात् 6, 30 और 36 मुद्राओं पर आधारित रीर) में गिरावट की प्रवृत्ति जारी रही जोकि सांकेतिक आधार पर रुपये के मूल्य में आई तेज गिरावट को दर्शाती है। तथापि जनवरी में अब तक (अर्थात् 13 जनवरी 2012 तक) सूचकांक में वृद्धि हुई है क्योंकि इस अवधि में सांकेतिक रूप में रुपये के मूल्य में बढ़ोतरी हुई थी (सारणी III.5)।

### रुपये के मूल्यहास तथा इक्विटी के सूचकांकों में गिरावट का तुलन-पत्र पर असर पड़ सकता है

III.10 भारतीय इक्विटी बाजार में उत्साह में कमी आने के चलते भारतीय कंपनियों को एफसीसीबी को इक्विटी में परिवर्तित करने के लिए नए तरीके से योजना बनानी पड़ सकती है। यह ऐसे परिणामी ऋण-चक्राती अनुपात में गिरावट को रोकने के लिए है जिनका तुलन-पत्र पर असर पड़ सकता है। वैश्विक वित्तीय परिदृश्य के नाजुकपन तथा अनिश्चितताओं को देखते हुए भारतीय कंपनियों के विदेशी उधार को रोलओवर करना महंगा पड़ सकता है। इसके

**सारणी III.5: सांकेतिक और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर - व्यापार आधारित**

(आधार: 2004-05 = 100)

(प्रतिशत वृद्धि (+)/कमी (-))

	सूचकांक 13 जनवरी 2012 अ	वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ (औसत)			2011-12 (मार्च की तुलना में जुलाई के अंत में)	2011-12 (जुलाई के अंत की तुलना में 13 जनवरी)
		2008-09	2009-10	2010-11अ		
1	2	3	4	5	6	7
36-रीर	94.2	-9.9	-3.1	8.0	1.2	-10.0
36-नीर	83.1	-10.9	-2.6	3.0	-0.2	-10.5
30-रीर	86.0	-10.3	-4.6	4.8	1.7	-10.1
30-नीर	85.1	-8.4	-2.2	1.1	-0.3	-9.9
6-रीर	107.2	-9.3	-0.3	13.1	1.2	-9.8
6-नीर	80.7	-13.6	-3.7	5.7	-0.1	-10.9
₹/अम.डॉ. (औसत)	47.4	-12.4	-3.2	4.0	3.0	-3.8#
₹/अम.डॉ. (मार्च के अंत में)	50.7*	-21.5	12.9	1.1	1.1	-11.9*

नीर: सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर।

रीर: वास्तविक प्रभावी विनिमय दर।

अ: अर्न्तम। \*: 18 जनवरी 2012 को।

#: अप्रैल- जनवरी 13, 2011 की तुलना में अप्रैल- जनवरी 13, 2012।

अलावा रुपये में होने वाले मूल्यहास से घरेलू तथा विदेशी उधारियों के ब्याज दर अंतर का लाभ खत्म हो सकता है। अतः कंपनियों को चाहिए कि वे अपनी प्राप्य तथा देय राशियों का विनिमय दर के उतार-चढ़ावों से बचाव के उपाय करें।

### बाह्य ऋण में बढ़ोतरी हो सकती है परंतु यह व्यवस्थित रहेगा

III.11 सितंबर 2011 के अंत में मार्च 2011 की तुलना में बाह्य ऋण की मात्रा 306.4 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 326.6 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई जो मुख्यतः बाह्य वाणिज्यिक उधार, निर्यात ऋण तथा अल्पावधि ऋण की मात्रा में बढ़ोतरी होने की वजह से थी (सारणी III.6)। चालू खाते के घाटे को पूरा करने के लिए ऋण का सृजन करने वाले प्रवाहों का सहारा लिये जाने से भारत के बाह्य ऋण में और बढ़ोतरी होने की संभावना है। ईसीबी तथा एनआरआई जमाराशियों के रूप में प्रवाह के बढ़े हुए स्तर का आने वाली तिमाहियों में भारत के बाह्य ऋण पर कुछ असर पड़ सकता है। इसके बावजूद, बाह्य ऋण के व्यवस्थित रहने की संभावना है। भारत का गैर-ऋण बाह्य पूंजी का स्तर बढ़ा रहने के कारण सुदृढ़ दीर्घावधि वृद्धि से बाह्य ऋण का रोलओवर अपेक्षाकृत सुगम हो सकता है।

### बाह्य संवेदनशीलता संकेतकों में मामूली गिरावट आई

III.12 2011-12 की दूसरी तिमाही में बाह्य क्षेत्र की संवेदनशीलता संकेतकों में मामूली गिरावट आई (सारणी III.7)। सितंबर 2011 के



**सारणी III.6: भारत का बाह्य ऋण**

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	मार्च 2011 के अंत में (आंस)	जून 2011 के अंत में (आंस)	सितंबर 2011 के अंत में (अ)	घट-बढ़ (जून 2011 के अंत की तुलना में सितंबर 2011 के अंत में)	
				राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. बहुपक्षीय	48.5	49.4	49.1	-0.2	-0.5
2. द्विपक्षीय	25.8	26.3	27.3	1.0	3.7
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	6.3	6.4	6.2	-0.2	-2.4
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से ऊपर)	18.6	18.7	19.7	1.0	5.3
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	88.9	93.8	99.0	5.3	5.6
6. एनआरआई जमाशियाँ	51.7	52.9	52.3	-0.6	-1.1
7. रुपया ऋण	1.6	1.6	1.4	-0.1	-9.3
8. दीर्घावधि (1 to 7)	241.4	249.0	255.1	6.1	2.4
9. अल्पावधि	65.0	68.5	71.5	3.1	4.5
<b>कुल (8+9)</b>	<b>306.4</b>	<b>317.5</b>	<b>326.6</b>	<b>9.1</b>	<b>2.9</b>

अ: अनतिम

आंस: अंशिक रूप से संशोधित

अंत में आयात का रिजर्व कवर कम था तथा कुल बाह्य ऋण की तुलना में अल्पावधि बाह्य ऋण के अनुपात में भी मामूली वृद्धि हुई। परंतु सितंबर 2011 के अंत में जून 2011 के अंत की तुलना में निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएं 237.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से घटकर 224 बिलियन अमरीकी डॉलर हो जाने से भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति में सुधार दिखाई दिया (सारणी III.8)। परिणामस्वरूप, 2011-12 की दूसरी तिमाही में जीडीपी की तुलना में भारत के निवल अंतरराष्ट्रीय वित्तीय देयता अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति जारी रही। यह गिरावट मुख्यतः विनिमय दर में उतार-चढ़ाव के कारण हुए मूल्यन प्रभाव को दर्शाती है।

**अवशोषण तथा व्यय अंतरण नीतियों के जरिए समायोजन की जरूरत है**

III.13 कमजोर रुपये का निर्यात पर पड़ने वाले असर के चलते बढ़ते चालू खाते का घाटा एक समय अंतराल के बाद ठीक होने की संभावना है जबकि विनिमय दर में बदलाव के असर से आयात की मांग में कमी आएगी। सकल मांग में हो रही गिरावट से चालू खाते के घाटे को कम करने में मदद मिलनी चाहिए। परंतु अनिश्चित वैश्विक परिवेश में यदि समायोजन में देरी होती है तो नीतिगत कार्रवाई की जरूरत पड़ सकती है। इस संबंध में व्यय को कम करने वाली तथा उसके अंतरण में मदद करने वाली नीति की जरूरत पड़ सकती है।

**सारणी III.7: बाह्य क्षेत्र संवेदनशीलता सूचकांक**

(प्रतिशत)

सूचकांक	मार्च 2010 के अंत में	जून 2010 के अंत में	मार्च 2011 के अंत में	जून 2011 के अंत में	सितंबर 2011 के अंत में
1	2	3	4	5	6
1. सकल देशी उत्पाद की तुलना में कुल ऋण का अनुपात*	18.0	17.6	17.4	17.2	17.8
2. कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (मूल परिपक्वता)	20.0	20.9	21.2	21.6	21.9
3. कुल ऋण की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (अवशिष्ट परिपक्वता)	41.2	42.5	42.2	43.3	43.4#
4. कुल ऋण की तुलना में रियायती ऋण का अनुपात	16.8	15.9	15.5	15.1	14.7
5. कुल ऋण की तुलना में रिजर्व का अनुपात	106.9	98.0	99.5	99.6	95.4
6. रिजर्व की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (मूल परिपक्वता)	18.8	21.0	21.3	21.7	22.9
7. रिजर्व की तुलना में अल्पावधि ऋण का अनुपात (अवशिष्ट परिपक्वता)	38.6	42.1	42.3	43.5	45.5#
7. रिजर्व का आयात कवर (महीनों में)	11.1	10.7	9.6	9.2	8.5
8. आयात का रिजर्व कवर और ऋण चुकौती संबंधी भुगतान (महीनों में)	10.5	10.1	9.1	8.8	8.0
9. ऋण चुकौती अनुपात (चालू प्राप्तियों की तुलना में ऋण चुकौती संबंधी भुगतान)	5.8	4.1	4.3	4.7	4.9
10. बाह्य ऋण (बिलियन अमरीकी डॉलर)	261.0	270.3	306.4	317.5	326.6

\*: जून 2010, जून 2011 और सितंबर 2011 के अंत के अनुपात वार्षिकीकृत सकल देशी उत्पाद पर आधारित है।

#: भारतीय रिजर्व बैंक का अनुमान।

III.14 अगस्त 2011 से विनिमय दर में हुई गिरावट का 2012-13 के निर्यात में अनुकूल असर पड़ेगा। परंतु भारत के आयात में बेलोच

**सारणी III.8 : भारत के समग्र अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति**

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

अवधि	सितं-10 (आंस)	दिसं-10 (आंस)	मार्च-11 (आंस)	जून 11 (आंस)	सितं-11 (अ)
1	2	3	4	5	6
निवल आईआईपी	-205.0	-221.8	-224.3	-237.5	-224.9
आस्तियाँ	406.9	412.0	426.6	438.8	434.7
देयताएं	611.9	633.7	650.9	676.3	659.6
निवल आईआईपी/ जीडीपी अनुपात	-13.3	-13.5	-13.0	-12.9	-12.3

अ: अनतिम आंस: आंशिक रूप से संशोधित

टिप्पणी: वार्षिकीकृत सकल देशी उत्पाद पर आधारित।

वाली आयातीत वस्तुओं की अधिकता तथा अपूर्ण श्रम बाजार को देखते हुए यह जरूरी नहीं है कि व्यय में बदलाव की नीति से चालू खाते के घाटे में अपेक्षित समायोजन हो पाएगा। इसके अलावा तेल की मांग को कम करने के लिए पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों के नियंत्रण को और कम करने की प्रक्रिया में तेजी लायी जा सकती है। साथ ही राजकोषीय व्यय को नियंत्रित करने की जरूरत है ताकि अवशोषण को रोका जा सके तथा दोनों ही घाटों को एक दूसरे का पूरक बनने से रोका जा सके।

III.15 2012-13 में अल्पावधि बाह्य ऋण पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत पड़ेगी। पूंजी खाते में, हाल के नीतिगत उपायों ने एफआईआई द्वारा निवेशों एवं एनआरआई जमाराशियों के रूप में ऋण वाले पूंजी प्रवाहों को बढ़ाया है। परंतु आगे चल कर ऋण प्रवाहों पर निर्भरता को कम करने एवं सुधार की प्रक्रिया को तेज करने की जरूरत होगी ताकि इक्विटी प्रवाहों को फिर से बढ़ाया जा सके क्योंकि अन्यथा धूमिल वैश्विक परिवेश में निवेशक सुदृढ़ वृद्धि के अवसरों की तलाश में रहते हैं।